IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 5, May 2022
Impact Factor: 6.252

जम्मू–कश्मीर में आतंकवाद व मानवाधिकर के प्रभाव का एक अध्ययन

Lok Pati Yadav[1] and Dr. Saroj Agrawal[2]
Research Scholar, M. A. Political Science, U.G.C. Net[1]
Professor/Assistant Professor, Government Girls College, Morena, MP, India[2]

शोध–सारांश

विश्व में प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में मानवाधिकार की अवधारणा ने अपना स्थान बना लिया था। प्राचीन यूनान में अरस्तु का न्याय सिद्धांत सामने आया, प्राचीनकाल में महाभारत के शान्ति पर्व में राजा के आचरण के बारे में कहा गया है, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रजा के कल्याण में राजा का कल्याण बताया गया है। सम्राट अशोक ने कलिंग अभिलेख में प्रजा को सन्तान की तरह माना और अधिकारियों को जनता पर अत्याचार न करने का निर्देश दिया। मानवाधिकारों के संबंध में भारतीय परम्परा को देखे तो स्पष्ट होता है कि पुरातन काल में हमारे यहां मानवाधिकारों के सरंक्षण एवं संवर्धन के लिए सभी प्रकार की आवश्यक व्यवस्थाएं की गयी है। ''वासुधैव कुटुम्बकम्'' का सार्वभौमिक सिद्धांत हमारी संस्कृति का मूल रहा है। जिसमें न केवल देश बल्कि सम्पूर्ण विश्व के सभी प्राणियों को एक ही परिवार का सदस्य माना गया है।[1] प्रस्तुत शोध पत्र में जम्मू कश्मीर का अध्ययन करने का अनुपम प्रयास हैं।

मुख्यशब्द :– जम्मू–कश्मीर, आतंकवाद, मानवाधिकार आदि।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2011
2. डॉ. वी.एल. फड़िया, ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे'' पृ. 263
3. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2011
4. यू0आर0 घई, ''अंतर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत और व्यवहार'' पृ. 429
5. तदैव पृ. 430–431
6. डॉ. वी.एल. फड़िया, ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे'' पृ. 268–269
7. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2011